बाइबल टीचर

वर्ष 21 नवम्बर 2024 अंक 12

सम्पादकीय

नरक एक ऐसा स्थान है जहां कोई नहीं जाना चाहता

जब हम नरक के विषय में बात करते हैं तो हमें जानना चाहिये कि बाइबल बताती है कि नरक एक ऐसा स्थान है जहां सब प्रकार के दुष्ट लोग जायेंगे। आज कई लोगों का यह विश्वास है कि प्रेमी परमेश्वर किसी को भी नरक नहीं भेजेगा। हम अपने इन्सानी दिमाग से अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते कि नरक कितना भयानक होगा। यीशु ने अपने तरीके से नरक के विषय में लोगों को समझाया था कि नरक कैसा होगा? यह एक ऐसा स्थान होगा, जहां हमेशा रोना और दातों का पीसना होगा या कहना चाहिए कि यह ऐसा स्थान है जहां कोई भी जाना नहीं चाहेगा। कई लोग कहते हैं कि यह एक झूठी बात है कि नरक है, क्योंकि नरक जैसी कोई जगह नहीं है। यहोवा विटनैस कलीसिया सिखाती है कि नरक यहीं तक ही सीमित है एसलिये कोई नरक नहीं है। कई यहूदी लोग भी स्वर्ग और नरक में विश्वास नहीं करते।

कई लोग ऐसे भी हैं जो नरक के बारे में बात ही नहीं करना चाहते। नरक शैतान और उसके लोगों के लिये तैयार की गई जगह है। यीशु ने हमारी आत्माओं के विषय में कहा था कि हमें अपनी आत्माओं की चिंता करनी चाहिये, और परमेश्वर से डरना चाहिए जो शरीर और आत्मा दोनों को नरक में डाल सकता है। उसने लोगों से कहा था, ''जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते उन से मत डरना, पर उसी से डरना जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है। (मत्ती 10:28)। शैतान और उसके दूत उस अनंत आग में यानि नरक में डाले जाऐंगे जो उनके लिये तैयार की गई है। (मत्ती 25:41)। जो लोग परमेश्वर की इच्छा पर नहीं चलते उनका स्थान अनंतकाल का नरक होगा। बाइबल हमें बताती है कि जो लोग सुसमाचार को नहीं मानते परमेश्वर उनसे पलटा लेगा। लिखा है, ''प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रकट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानेगा, और हमारे प्रभु यीशु को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा।'' (2 थिस्स. 1:7-8)।

यीशु ने अपने दिनों के धार्मिक अगुवों से कहा था, ''हे सांपों, हे करैतों के बच्चों, तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोगे?'' यदि कोई कहे कि कोई नरक नहीं है तो वह यीशु को झूठा ठहरा रहा है।

नरक ऐसा स्थान है जिसकी तुलना आप जलते हुए कूड़े के ढेर से भी कर सकते हैं जिसमें से सड़ी हुई बदबु और धुआ आ रहा है। प्रकाशितवाक्य 20:10 में कहा गया है, ''और उनका भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील, में जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जायेगा, और वे रात-दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे। यानि नरक में तमाम दुष्ट लोग हमेशा के लिये तड़पते रहेंगे। नरक एक ऐसा स्थान है जो अनंतकाल तक होगा। इसे अनंतकाल की आग भी कहा गया है। नरक एक ऐसा स्थान होगा कि लोग नरक से बचने के लिये मृत्यु को मांगेंगे, और न पाएंगे, और मरने की लालसा करेंगे, और मृत्यु उनसे भागेगी।'' (प्रकाशित. 9:6)। क्या आप इस बारे में विचार करेंगे कि नरक का दण्ड कितना भयानक दण्ड है, और इससे बचने के लिये हमें अपने जीवनों को बुराई से बचाकर परमेश्वर के निकट आना है।

नरक के बारे में यह अब जानते हुए हम कभी भी यहां जाना नहीं चाहेंगे। आज यदि हमने प्रभु यीशु पर विश्वास करके उसके सुसमाचार को नहीं माना है तो हमें इसके बारे में सोचना चाहिए। बाइबल का सुसमाचार सारे संसार के लिये यह है कि प्रभु यीशु हमारे पापों के लिये क्रूस पर मारा गया, कब्र में गाड़ा गया, और तीसरे दिन मृत्यु पर विजय पाकर मृतकों में से जी उठा। यीशु में विश्वास करके और बपतिस्मा लेकर हम इस सुसमाचार का पालन कर सकते हैं (मरकुस 16:16)।

आज मसीहीयों के लिए भी यह चेतावनी है कि सब प्रकार की बुराई को छोड़कर प्रभु की नज़दीकी में आयें। बाइबल में हम पढ़ते हैं कि जो लोग अर्थात् मसीहीयों के बारे में वह कहता है, ''और इसलिये कि हमारा ऐसा महान् याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है, तो आओ, हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जायें। और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है। और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिये एक-दूसरे की चिंता किया करें, और एक-दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़े, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक-दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखों, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो। (इब्रानियों 10:21-25)। फिर 26 पद में लिखा है कि ''सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान-बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकि नहीं। हां, दण्ड को एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकि है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। (26 और 27 पद)।

हमें अपने जीवनों को ऐसे चलाना है ताकि हम परमेश्वर के विरूद्ध पाप न करें। प्रेरित पतरस इसके विषय में कहता है, ''क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होटों को छल की बातें करने से रोके रहे। वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करें; वह मेल-मिलाप को ढूढ़ें, और उसके यत्न में रहे। क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी

विनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख रहता है। (1 पतरस 3:10-12)। यदि हम नरक से बचना चाहते हैं तो अपने आपको एक अच्छा इन्सान और एक दृण मसीही बनाकर रखें। एक ऐसा दिन आयेगा जब हमें यह एहसास हो जाएगा कि वास्तव में परमेश्वर ने अपने वचन में कहा है, वो कितना सच्चा है, वह कहता है, ''और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए, और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिये, जिसके कारण आकाश आग से पिघल जायेंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर पिघल जायेंगे (2 पतरस 3:12)। यदि हम नरक से बचना चाहते हैं, तो परमेश्वर से प्रेम करके उसकी सेवा करें, और मृत्यु तक विश्वासयोग्य बने रहें, उसका वायदा है कि हमें जीवन का मुकुट मिलेगा। (प्रकाशित. 2:10)।

- **फ्रासिस डेविड**

विश्वास का सुसमाचार

सनी डेविड

इस लेख में मैं आपको किसी नई वस्तु के बारे में नहीं बताने जा रहा हूं। परन्तु मैं आज फिर से आपके सामने उसी सुसमाचार को प्रस्तुत करने जा रहा हूं जो आज से उन्नीस सौ साल पहले गुलगुता नाम की जगह पर परमेश्वर ने स्वर्ग से प्रगट किया था। यह सुसमाचार एक बहुत बड़ी खुश-खबरी है, अर्थात् परमेश्वर ने जगत के प्रत्येक मनुष्य के लिये अपने एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया। परन्तु शायद आप कहें, कि परमेश्वर का पुत्र कैसे हो सकता है? क्या परमेश्वर मनुष्य है? मित्रों, परमेश्वर ने अपने वचन की जिस पुस्तक को हम सबको दिया है, उसमें उसने हमें लिखकर यह बताया हैं, कि जगत की सृष्टि से पूर्व, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था" और "सब कुछ उसी (वचन) के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।" और फिर परमेश्वर हमें बताता है, कि वह, "वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर (उस वचन ने) हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना 1: 1-3, 14)।

सो आज से उन्नीस सौ वर्ष पूर्व यीशु नाम का जो मनुष्य गुलगुता की पहाड़ी पर क्रूस पर लटकाया गया था वह और कोई नहीं परन्तु वास्तव में परमेश्वर का वही वचन था जिसे उसने अपने पवित्र आत्मा की सामर्थ से एक कुंवारी के द्वारा उत्पन्न किया था।

इस बात की साक्षी वे सभी भविष्यद्वाणियां हैं जो परमेश्वर के पुत्र यीशु के सम्बन्ध में उसके जन्म से सैकड़ों वर्ष पहिले कही गई थीं। इस बात का प्रमाण यीशु के वे सभी अद्भुत तथा आश्चर्यजनक काम हैं, जो उसने लोगों के बीच में किए, और जिनके बारे में आज हम बाइबल तथा इतिहास में पढ़ते हैं। इस बात का सबूत वे सभी बातें हैं जो क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय उस स्थान पर घटी थी। लिखा है, कि जिस समय

परमेश्वर के पुत्र यीशु की मृत्यु हुई थी, उस वक्त उस जगह, जहाँ वह क्रूस पर लटकाया गया था, अन्धेरा छा गया था, और धरती डोल गई थी, और चट्टानें तड़क गई थीं। और इतनी दहला देनेवाली थीं ये सभी घटनाएं, कि हम पढ़ते हैं, कि जो लोग यीशु को क्रूस पर चढ़ा रहे थे वे इन सभी बातों को देखकर अत्यन्त डर गए और उनमें से बहुतेरों ने कहा, कि सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र है। (मत्ती 27)।

मित्रों, इस संसार में यदि कोई भी बड़ा काम मैं कर सकता हूं तो वह यही है कि मैं आप सबको प्रभु यीशु मसीह के इस सुसमाचार से परिचित कराऊं, कि उसने हम सबके पापों के बदले में स्वयं अपने आपको मरने को दे दिया! इसी सुसमाचार के सम्बन्ध में प्रेरित पौलुस एक जगह बाइबल में लिखकर कहता है, कि, "मैं यूनानियों और अन्य-भाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्ज़दार हूं ..... क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिए ...... उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।" (रोमियों १: १४, १६)। सो मित्रों, मैं आपका कर्ज़दार हूं! प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के बारे में मैं आपका कर्ज़दार हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि मसीह ने क्रूस पर चढ़कर हम सब के पापों के प्रायश्चित के निमित्त अपना बलिदान दिया है। और उसने कहा है, कि इस सुसमाचार को माननेवाला हर एक व्यक्ति इसके बारे में अन्य लोगों को बताए। मित्रों, इस लेख के समय में मैं आपको अच्छी-अच्छी कहानियां बता सकता हूं, चुटकुले और अच्छी-अच्छी मनोरंजक बातें बता सकता हूं। संगीत और आवाज़ की अच्छी-अच्छी धुनों से आपका मनोरंजन करा सकता हूं। परन्तु ऐसी कोई भी बात आपकी अनमोल आत्मा को नाश होने से नहीं बचा सकती। आपकी आत्मा को जगत में केवल एक ही वस्तु बचा सकती है, एक ही वस्तु, और वह वस्तु है, यीशु मसीह का सुसमाचार! जो हर एक विश्वास लानेवाले के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।

क्या आपने कभी सोचा है, कि आपकी मृत्यु के पश्चात आपकी आत्मा का क्या होगा? शायद आपने अन्य अनेक बातों के बारे में सोचा होगा। आपने कदाचित अपने परिवार और सम्बन्धियों के बारे में सोचा होगा। शायद आपने अपने घर और जायदाद के बारे में सोचा होगा। परन्तु इनमें से कोई भी वस्तु इतनी अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है जितनी की आपकी आत्मा। जब यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसने उस समय लोगों के सामने एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण सवाल रखा था, उसने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाएं, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण (अर्थात् आत्मा) के बदले में क्या देगा?'' (मत्ती 16:26)। लेकिन यह सवाल आज हम में से हर एक के लिये भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि उन लोगों के लिए था। यदि हम जगत की हर एक वस्तु को पा लें, यदि हम धनी और बुद्धिमान बन जाए, यदि हम सुखी वा सामर्थी बन जाए। परन्तु अपने जीवन के अन्त में अपनी ही आत्मा की हानि उठाए, तो हमें क्या लाभ होगा? मित्रों आज मनुष्य बड़ी ही तरक्की कर रहा है। वैज्ञानिक और तकनीकी, बुद्धि और शक्ति के दृष्टिकोण से संसार का प्रत्येक देश आज उन्नति कर रहा है। हम में से प्रत्येक मनुष्य आज उन्नति कर रहा है। हम आगे बढ़ना चाहते हैं, तरक्की

करना चाहते हैं। क्योंकि हमें अपने भविष्य की चिन्ता है। परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण से आज हम कहाँ जा रहे हैं? परमेश्वर और सच्चाई का आज हमारे जीवन में क्या स्थान है? जब पृथ्वी पर का डेरा सरीखा हमारा यह घर गिराया जाएगा तो हमारी आत्मा का क्या होगा? क्या आपने इस विषय में कभी चिन्ता करके सोचा है?

मित्रों, यह समय है, कि इस वक्त पूरी गम्भीरता के साथ आप इस विषय पर विचार करें। परमेश्वर चाहता है, कि आप इस बात के ऊपर ध्यान दें। क्योंकि वह अपने वचन की पुस्तक के द्वारा हमें स्पष्ट रूप से बताता है, कि जगत में प्रत्येक मनुष्य अपने पाप और अधर्म के कारण उस से दूर और अलग है, और उसकी महिमा से रहित है। और जब तक मनुष्य उसके साथ अपना मेल नहीं कर लेता, वह उसके पास उसकी संगति में नहीं आ सकता। अक्सर जब किसी मनुष्य की मृत्यु हो जाती है, तो उसके सम्बन्धि या मित्र कहते हैं कि वह मनुष्य परमेश्वर के पास चला गया या वह स्वर्ग सिधार गया। परन्तु मित्रों, मैं आपको बताना चाहता हूं, कि परमेश्वर के साथ अपना मेल स्थापित किए बिना कोई भी मनुष्य उसके स्वर्ग में उसके पास नहीं पहुंच सकता। जब तक मनुष्य अपने पाप से छुटकारा न पा ले वह परमेश्वर के पास नहीं जा सकता। क्योंकि जिस प्रकार ज्योति और अंधकार की कोई संगति नहीं, उसी प्रकार धार्मिकता और अधर्म का कोई मेल-जोल नहीं। पापी मनुष्य पवित्र परमेश्वर के साथ नहीं रह सकता।

परन्तु अपने वचन की पुस्तक में न केवल परमेश्वर ने मनुष्य की पापपुण तथा खोई हुई दशा को ही बताया है, किन्तु उसने यह भी बताया है कि मनुष्य किस प्रकार अपने पाप से छुटकारा प्राप्त करके उसके पास वापस आ सकता है। और यही सुसमाचार है! अर्थात्, पापी तथा खोया हुआ मनुष्य फिर से परमेश्वर के पास वापस आ सकता हैं; वह अपनी आत्मा को नरक में जाने तथा नाश होने से बचा सकता है! "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा" पवित्र बाइबल कहती है, "कि उसने अपना एकलीता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना 3:16)।

मित्रों, परमेश्वर आज जगत में प्रत्येक स्त्री तथा प्रत्येक पुरुष को अनन्त जीवन देना चाहता हैं। वह आज जगत में प्रत्येक मनुष्य का उसके पापों से उद्धार करना चाहता है। वह हर एक इंसान के पापों को दूर करके उसके साथ अपना मेल करना चाहता है। क्योंकि वह जगत में हर एक मनुष्य से प्रेम रखता है, और नहीं चाहता कि कोई भी नाश हो। और इसलिए उसने अपने एकलौते पुत्र को जगत के पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस पर बलिदान होने को दे दिया। परन्तु वह कहता है, कि उसने जगत से प्रेम रखकर अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्या आप उस पर विश्वास करते हैं, कि वह आपके पापों के बदले में क्रूस पर मारा गया? यीशु का सुसमाचार, वास्तव में विश्वास का सुसमाचार है। अपनी मृत्यु तथा जी उठने के बाद, जब उसने अपने चेलों को सुसमाचार का प्रचार करने को जगत में भेजा तो उसने उनसे कहा, कि सुनकर "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:16)।

मित्रों, जिस प्रकार से यह सच है कि आज हम सब जीवित है, उसी प्रकार यह भी सच है कि एक दिन हम सबका न्याय परमेश्वर के वचनानुसार होगा। यदि आज हम उसके पुत्र पर विश्वास लाकर उसके सुसमाचार को नहीं मानते तो न्याय के दिन हम स्वयं अपने आपको ही दोषी ठहराएंगे। परन्तु परमेश्वर आपको बुद्धि दे कि आप उसके पुत्र में विश्वास लाए, और उस अनन्त जीवन को प्राप्त करें जिसे वह आज आपको और जगत में हर एक मनुष्य को देना चाहता है।

पवित्र आत्मा का "हाथ रखने" का नाप

जे. सी. चोट

अब हम पवित्र आत्मा के "हाथ रखने'' के नाप के बारे में और जानना चाहते हैं। इन बातों के अध्ययन में हमारी दिलचस्पी खास तौर पर इस कारण है क्योंकि इस विषय पर बहुत सी गलत शिक्षाओं के साथ-साथ आत्मा और उसके काम करने के सम्बन्ध में बहुत सी नासमझी पाई जाती है।

मसीह के लिए यूहन्ना ने कहा, "क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है; क्ष्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता। पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएं उसके हाथ में दे दी हैं" (यूहन्ना 3:34, 35)। यानी मसीह को आत्मा की सामर्थ बिना नाप के मिली थी। जिसका अर्थ यह है कि आत्मा के द्वारा किया जाने वाला उसका कोई भी कार्य सीमित नहीं था। परन्तु यदि मसीह को आत्मा "बिना नाप के'' मिला तो इसका अर्थ यह है कि दूसरों को वह "नाप कर'' मिला। यह इस बात का सुझाव देगा कि उनके पास आत्मा की सामर्थ तो थी, पर वे उस सामर्थ का इस्तेमाल एक सीमा तक कर सकते थे।

उदाहरण के लिए हमने अपने अध्ययन में देखा है कि पवित्र आत्मा का और आग का बपतिस्मा देने की सामर्थ केवल प्रभु के पास थी (मत्ती 3:11)। यह पुष्टि करने के लिए कि उसके पास बिना नाप के आत्मा की सामर्थ थी (मत्ती 3:13-17), हमें याद रखना आवश्यक है कि ये बपतिस्मे केवल वही दे सकता था।

जहां तक पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की बात है, पहली बात तो यह कि मसीह ने केवल प्रेरितों से वायदा किया था कि वह उनके लिए सहायक भेजेगा जो कि पवित्र आत्मा था (यूहन्ना 14:26)। इस वायदे को लूका 24:49 में और प्रेरितों 1:8 में दोहराया गया। प्रेरितों 2:1-4 में हम पढ़ते हैं कि प्रेरितों को सचमुच में बपतिस्मा दिया गया था। इसका अर्थ यह हुआ कि यह पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का नाप था। बेशक उन्हें यह मिला था और इसका एक उद्देश्य था, पर वे दूसरों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं दे सकते थे। इसका अर्थ यह है कि आत्मा का इस्तेमाल वे केवल इसी सीमा तक कर सकते थे।

प्रेरित केवल बारह थे और उन्हें सारे संसार में सुसमाचार को पहुंचाने की आज्ञा दी गई थी। यानी उन्हें एक बहुत बड़ा काम सौंपा गया था। इसके अलावा प्रेरितों 6 अध्याय में हम पढ़ते हैं जहां वे चेलों की भौतिक आवश्यकताओं में उनकी सहायता में उलझ गए थे। यहां पर वचन हमें बताता है, "तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, "यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें। इसलिये, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे' " (प्रेरितों 6:2-4)।

आइए अब हम प्रेरितों के सुझाव से सम्बन्धित कुछ अवलोकन करें: ऐसे लोग हैं जो इस बात की वकालत करते हैं कि या तो (1) सब मसीही लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलता है, या यकीनन (2) वे इसे पा सकते हैं। पर साफ़ है कि **प्रेरितों 6 अध्याय तक प्रभु की आज्ञा मानने वाले लोगों में सबको पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला था।** हमें यह मालूम है क्योंकि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के बावजूद वे कोई आश्चर्यकर्म नहीं कर रहे थे।

साफ़ है कि प्रेरितों को इस बात की समझ थी कि आम मसीही लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला है जिस कारण चुने हुए सात चेलों के पास आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं थी। तर्कसंगत रूप में, यदि उनके पास ऐसी सामर्थ होती तो चेलों के लिए उनमें से जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे उस काम में सहायता के लिए जो किया जाना आवश्यक था, सात पुरुषों को चुनना आवश्यक नहीं होना था!

इस तथ्य का कि प्रेरितों ने कहा कि सात पुरुषों को चुन लो जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हों, कुछ और अवलोकन करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना तो सम्भव था पर आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ अभी भी उनके पास नहीं थी! परन्तु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने और पवित्र आत्मा का नाप होने में जिससे व्यक्ति को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति मिल जाए, क्या अंतर होगा? साफ़ है कि अंतर इस तथ्य में था कि आत्मा के अलग-अलग नाप थे। प्रेरितों को बपतिस्मे का नाप मिला था जिससे वे आश्चर्यकर्म करने के दानों वाले सारे काम कर सकते थे, जैसे अन्य भाषाओं में बोलना, बीमारों को चंगा करना, मुर्दों को जिलाना, परमेश्वर की प्रेरणा से प्रचार करना और लिखना तथा अन्य प्रकार के आश्चर्यकर्म करना।

परन्तु इसके उलट उन चेलों को जिन्हें प्रेरितों के काम में उनकी सहायता के लिए चुना गया था, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के बावजूद, केवल आत्मा का दान यानी वास ही मिला था जिसकी प्रतिज्ञा प्रेरितों 2:38 में की गई थी। इस दान के पाने वालों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं मिली थी क्योंकि प्रेरितों 5:12 से पता चलता है कि तब तक आश्चर्यकर्म केवल प्रेरित ही कर सकते थे।

इन चुने हुए चेलों को आत्मा का कौन सा नाप मिलना था? वचन बताता है कि उनके चुने जाने के बाद उन्हें "प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके

उन पर हाथ रखे" (प्रेरितों 6:6)। तो यह क्या था? यह पवित्र आत्मा का हाथ रखने का नाप था। प्रेरितों ने ही इन पुरुषों के ऊपर हाथ रखे थे इसलिए **केवल प्रेरितों के पास ही आत्मा का यह नाप देने की सामर्थ थी।**

परन्तु ये सात चेले बाद में क्या कर सकते थे? आगे पढ़ने पर हम देखते हैं कि "स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बडे अद्‌भुत काम और चिह्न दिखाया करता था" (प्रेरितों 6:8)। बाकी क्या करते थे? वे ऐसा ही कर सकते थे जैसा कि हम अध्याय 8 में पढ़ते हैं, परन्तु याद रखें कि प्रेरितों के उन पर हाथ रखने से पहले वे ये सब बातें नहीं कर सकते थे।

पवित्र आत्मा के हाथ रखने के नाप से ये सातों चेले आश्चर्यकर्म तो कर सकते थे परन्तु इस दान को दूसरों को आगे नहीं दे सकते थे। उदाहरण के लिए फिलिप्पुस मसीह का प्रचार करने के लिए निचले इलाके सामरिया में चला गया, "जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और **जो चिह्न वह दिखाता था उन्हें देख देखकर,** एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के रोगी और लंगड़े भी अच्छे किए गए; और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया" (प्रेरितों 8:6-8)।

आगे हम पढ़ते हैं, "जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे, सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था; उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया" (प्रेरितों 8:14-17)।

जैसे पहले ध्यान दिलाया गया था कि इन सातों पर प्रेरितों ने हाथ बेशक रखे थे ताकि वे पवित्र आत्मा की चमत्कारी सामर्थ को पा सकें , पर इस सामर्थ को वे आगे नहीं दे सकते थे। यदि दे सकते होते तो फिलिप्पुस ने, जो उनमें से एक था, नये बने मसीहियों को अलौकिक शक्ति की आशीष देने के लिए योग्य लोगों को चुन लिया होता। इसके बजाय दो प्रेरितों को चलकर सामरिया में आना पड़ा और उन्होंने नये विश्वासियों में से कुछ के ऊपर हाथ रखे ताकि उन्हें आश्चर्यकर्म करने की शक्ति मिल सके जिससे वे उस जगह पर काम करने में सहायता कर सकें [याद रखें, नया नियम अभी लिखा नहीं गया था जिस कारण नये विश्वासियों के लिए सुसमाचार को फैलाने के लिए आत्मा की अगुआई की आवश्यकता थी]।

यकीनन प्रेरितों ने देश भर में बहुत से चेलों के ऊपर यानी उनके ऊपर जो ईमानदार, खरे और उस विशेष सामर्थ को पाने के योग्य थे, हाथ रखे। इससे मसीह का कार्य बढ़ा और स्थानीय मण्डलियों में परिपक्वता आई। परन्तु जब प्रेरितों की मृत्यु हो गई और उनकी भी जिनके ऊपर उन्होंने हाथ रखे थे, तो आश्चर्यकर्मों का युग खत्म हो गया! अब आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि अब नया नियम दिया जा चुका था। अब अगुआई और दिशा देने के लिए हम सब के पास बेहतर तरीका है क्योंकि हमारे पास परमेश्वर का लिखित वचन है।

पति और पत्नी

क्लेरेंस डीलोच, जूनि.

"... दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं" (1 पतरस 3:7)।

नये नियम में पति–पत्नी सम्बन्ध पर सबसे बढ़िया वचनों में से एक 1 पतरस 3:1–7 में मिलता है। पतरस वैवाहिक आनन्द की तीन आवश्यक बातों पर ज़ोर देता है।

- अधीनता
- लिहाज
- संहयोग

पतियों को जिम्मेदारी की चार बातें याद दिलाई गई हैं:

1. शारीरिक सांझ: "जीवन निर्वाह करो"
2. बौद्धिक सांझ: "बुद्धिमानी से"
3. भावनात्मक सांझ: "उसका आदर करो"
4... आत्मिक सांझ: "जिससे तुम्हारी प्राथनाएं रुक न जाएं"

सफल और सुखी वैवाहिक जीवन की कुंजी दो लोगों के मनों, हृदयों, शरीरों और जीवनों की एक–दूसरे के प्रति वचनबद्धता है। मसीही परिवार में पति और पत्नियां "दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं।" जब दोनों मसीह के सामने और एक दूसरे के सामने समर्पण कर देते हैं तो विवाह सुखी जीवन बन जाता है।

जो कुछ पतरस ने कहा उसको ध्यान में रखकर इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए अपने वैवाहिक जीवन में जोड़ लें:

1. क्या मैं स्वर्ग में पहुंचने के अपने जीवनसाथी के प्रयासों में सहायता कर रहा/रही हूं या रुकावट बन रहा/रही हूं?
2. क्या मैं अपने साथी की आत्मिक उन्नति के लिए खुशनुमा माहौल में योगदान दे रहा/रही हूं?
3. क्या हम एक दूसरे के व्यक्तित्व, मनोभावों आदि को समझने में बढ़ रहे हैं?
4. क्या मैं अपने साथी के अहसास और भावनाओं के प्रति और संवेदनशील होना सीख रहा/रही हूँ या मैं उसकी परवाह नहीं करता/करती हूं?
5. क्या यह विवाह सुखद या जी का जंजाल है, और इस दोनों में से मेरे कारण कौन सा है?

इस चौक लिस्ट के प्रकाश में आपका विवाह कैसा चल रहा है?

बाइबल के प्रायश्चित की ओर वापस

चार्ल्स बाक्स

यीशु के दुख सहने और मृत्यु के कारण मनुष्य जाति का छुटकारा, और मनुष्य का मेल मिलाप परमेश्वर के साथ हुआ है। पापी मनुष्य अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकता था। मनुष्य के लाचार होने को देखकर परमेश्वर ने यीशु के द्वारा प्रायश्चित उपलब्ध करवाया। ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा'' (रोमियों 5:8)। 1 यूहन्ना 4:10 में यूहन्ना ने भी यीशु के द्वारा प्रायश्चित होने की बात लिखी जब उसने कहा, ''प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।''

बाइबल का मूल विषय क्या है? बाइबल का मूल विषय यीशु के द्वारा मनुष्य का उद्धार है। मनुष्य को परमेश्वर के साथ संगति करने के लिए बनाया गया था। पाप के आने से पहले आदम और हव्वा की संगति परमेश्वर के साथ होती थी। परन्तु पाप करने के बाद वे छिप गए। ''तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था, का शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए'' (उत्पत्ति 3:8)। जीवन का सबसे अच्छा समय तब होता है जब लोग परमेश्वर के साथ बात करते हैं। आदम, हनोक, और दूसरे बहुत से लोगों ने इसे साबित किया है।

परमेश्वर मनुष्य को उसके साथ संगति करने के लिए विवश नहीं करता। वह अच्छे और बुरे में से चुनने की छूट मनुष्य को देता है। ''सुनो, मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीष और शाप दोनों रख देता हूँ'' (व्यवस्थाविवरण 11:26)। मनुष्य से गलत पसन्द को चुनवाने में शैतान जोरावर है। यीशु शैतान के कामों को नाश करने के लिए आया। ''जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है: परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे'' (1 यूहन्ना 3:8)।

अब्राहम के ''वंश'' के द्वारा उद्धार सम्भव है। ''अत: प्रतिज्ञाएं अब्राहम को और उसके वंश को दी गईं। वह यह नहीं कहता ''वंशों को,'' जैसे बहुतों के विषय में कहा; पर जैसे एक के विषय में कि ''तेरे वंश को'' और वह मसीह है'' (गलातियों 3:16)। प्रभु ने हमारे पापों के लिए अपने आपको देकर हमारे लिए अपने प्रेम को दिखाया है। यीशु प्रायश्चित को सम्भव बनाने के लिए क्रूस के ऊपर मरा।

सुसमाचार क्या है? यह खुशी की खबर क्यों है? सुसमाचार यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने, और जी उठने की खुशबखरी है। ''हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिस में तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैं

ने सब से पहिले तम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा'' (1 कुरिन्थियों 15:1-4)।

पाप मनुष्य की समस्या है। "निःसन्देह पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिस से पाप न हुआ हो'' (सभोपदेशक 7:20)। मनुष्य बुनियादी तौर पर पापी या मनुष्य के जैसा नहीं है। परमेश्वर पवित्र है और वह पाप से घृणा करता है। क्योंकि परमेश्वर पवित्र है इस कारण उसने अपने लोगों के पास छुटकारा भेजा ताकि लोग उसका भय मानें।'' उस ने अपनी प्रजा का उद्धार किया है; उस ने अपनी वाचा को सदा के लिये ठहराया है। उसका नाम पवित्र और भययोग्य है'' (भजन संहिता 111:9)।

उन पापों को जिनकी क्षमा नहीं की गई थी दण्डित किया जाएगा। "क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला। तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं? जिस की चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ" (इब्रानियों 2:2-3)। पौलुस को पता था कि मनुष्य की पाप की समस्या का एकमात्र उत्तर यीशु है। ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो। इसलिये मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर को व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूं'' (रोमियों 7:24-25)। मनुष्यजाति को यह पता होना आवश्यक है कि पापों से छुटकारा केवल यीशु के द्वारा मिलता है।

मसीह हमारे लिए कैसे मरा? सुसमाचार इस बात का बड़ा समाचार है कि यीशु ने मनुष्य की पाप की सज़ा को अपने ऊपर ले ली। क्रूस पर मेरी जगह मरकर उसने परमेश्वर के क्रोध को शांत किया। ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिये मर कर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए'' (। पतरस 2:24)।

मसीह ने सब पापियों की जगह दुख सहा। परमेश्वर के लिए मनुष्य के पाप को दण्ड देने के सिवाय और कोई चारा नहीं था। परन्तु यीशु की मृत्यु से पाप के दण्ड को चुकाया गया। उसकी मृत्यु हमारे लिए हमारी जगह पर किया गया बलिदान था। यशायाह ने कहा: (1) ''उस ने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया'', (2) ''वह परमेश्वर का मारा-कूटा और उसे हमने दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा'' (यशायाह 53:4)। (3) वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया'', (4) "वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया'', (5) ''हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं'' (यशायाह 53:6)। (6) ''यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया'' (यशायाह 53:69), (7) परमेश्वर ने उसके प्राण के परिश्रम को देखा और संतुष्ट हो गया (यशायाह 53:11)।

सुसमाचार इस बात की खुशखबरी है कि परमेश्वर अब पापों को क्षमा कर सकता है क्योंकि यीशु ने मनुष्य की जगह पर पाप का दण्ड सह लिया। "इसलिये कि मसीह

ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने, पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए; वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया'' (1 पतरस 3:18)।

मनुष्य के उद्धार का आधार क्या है? मनुष्य की क्षमा का एकमात्र आधार यीशु की मृत्यु है। ''क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे'' (रोमियों 5:19)। यीशु की मृत्यु, गाड़े जाना, और जी उठना मनुष्य के उद्धार का माध्यम है।

पतरस ने यीशु के नाम के द्वारा या उसके नाम में पापों की क्षमा का प्रचार किया। ''पतरस ने उनसे कहा, 'मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे' '' (प्रेरितों के काम 2:38)। पौलुस ने इसी संदेश का प्रचार किया। "इसलिये, हे भाइयो, तुम जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है'' (प्रेरितों के काम 13:38)।

क्या आप परमेश्वर की इस जबर्दस्त खुशखबरी को स्वीकार करेंगे कि यीशु आपके पापों के लिए मरा? क्या आप मसीह को पाने के लिए मसीह में बपतिस्मा लेंगे ताकि उसके लहू के द्वारा आपके पाप मिटाएं जाएं? ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (गलातियों 3:26-27)।

विश्वासी लोग मसीह के उद्धार दिलाने वाले लहू के सम्पर्क में उसकी मृत्यु में बपतिस्मा पाने से आते हैं। परमेश्वर की संतान बनने वालों के पास आनन्द करने का कारण है (प्रेरितों के काम 8:39)। मनुष्य को यीशु की मृत्यु के द्वारा अपने पापों से क्षमा पाने वाले परमेश्वर की खुशखबरी को मान लेने पर आनन्द मिलता है।

''क्या आप मसीह में हो?''

यहोवा हमारा परमेश्वर एक ही है!

जैरी बेट्स

अगले अध्ययन में हम परमेश्वर पिता, और यीशु, और पवित्र आत्मा के सम्बन्ध की चर्चा करेंगे। पहली नज़र में कोई कह सकता है कि ये तीन ईश्वर हैं, जिसका अर्थ यह हुआ कि मसीहियत वास्तव में बहुईश्वरवादी है। इसका दूसरा चरम यह मान लेना होगा कि एक ही परमेश्वर के तीन अलग-अलग रूप हैं। अन्य शब्दों में परमेश्वर तो केवल एक ही है परन्तु कभी उसने परमेश्वर पिता, कभी यीशु, और कभी पवित्र आत्मा के रूप में बात की। यीशु इस एक परमेश्वर का ही रूप है जबकि अन्य समयों में परमेश्वर को आत्मा के रूप में दिखाया गया है। यह तीन ईश्वर होने की दुविधा को निकाल देता है, परन्तु

हम बाइबल की शिक्षा के साथ इस शिक्षा को सही ठहराने की समस्या से भागते हैं।

परमेश्वरत्व की शिक्षा के विचार को समझ पाना कठिन है। वास्तव में मेरा मानना है कि हम परमेश्वरत्व को पूरी तरह से नहीं समझ सकते, पर इससे हमें हैरान नहीं होना चाहिए। परमेश्वर की बहुत सी बातें हैं जिन्हें मनुष्य पूरी तरह से नहीं समझ सकता। उदाहरण के लिए मनुष्य अनंतकाल के विचार को नहीं समझ सकता क्योंकि इस संसार में हर चीज़ का आरम्भ और अंत होना है। परन्तु परिभाषा के अनुसार अनन्तकाल का न तो कोई आरम्भ और न ही अंत होगा। बेशक हम कुछ उदाहरण दे सकते हैं जिन्हें समझने में हमें सहायता मिल सकती है परन्तु कोई भी उदाहरण अनन्तकाल को सही-सही समझाने में नाकाम होगा। यदि हम परमेश्वर की सब बातों और सब पहलुओं को समझ जाएं तो वह परमेश्वर ही नहीं रहेगा। जब हम यह सोचने लगते हैं कि हम परमेश्वर को पूरी तरह से समझते हैं, तो हमने परमेश्वर को एक मूरत बना दिया है और अब वह परमेश्वर नहीं रहा। हम किसी भी व्यक्ति अथवा वस्तु की चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, जो मनुष्य से बड़ा नहीं है, आराधना नहीं करना चाहते।

इस समस्या को सुलझाने के प्रयास

इसमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि मनुष्य ने बहुत सी शिक्षाएं बना ली हैं जिससे लगता है कि वह परमेश्वरत्व की समस्या को सुलझा देगी। कुछ प्रमुख समस्याओं पर ध्यान दें।

एक समाधान यीशु के परमेश्वर होने को पुन: परिभाषित करना है। यह विचार इस बात की शिक्षा देता है कि गर्भ में आने या अपने जन्म के समय यीशु किसी भी अर्थ में खुदा नहीं है बल्कि बाद में उसे परमेश्वर द्वारा गोद लिया गया और खुदा के पद पर ऊंचा किया गया। कोई यीशु को खुदा कह सकता है क्योंकि पृथ्वी पर उसके जीवन के समय परमेश्वर यीशु में और उसके द्वारा बड़ी मज़बूती के साथ काम कर रहा था। यह बात यीशु के खुदा होने और परमेश्वर के बीच तनाव को हल कर देती है। यह उन बहुत से अन्य वचनों को नकार देती और उनकी अनदेखी करती है जो यीशु और परमेश्वर के बीच समानता और गर्भ में अपने आने बल्कि गर्भ में आने से भी पहले यीशु के परमेश्वर होने की बात भी बताते हैं।

एक और विचार है जिसकी बात हमने पहले की है और यह परमेश्वर को एक अभिनेता के रूप में दिखाता हैं जो नाटक में कई भूमिकाएं अदा करता है। परमेश्वर एक समय में परमेश्वर पिता की भूमिका अदा कर रहा होता है जबकि एक अन्य समय में वह यीशु की भूमिका अदा करता है, और अन्य समयों में वह आत्मा की भूमिका अदा करता है। इस प्रकार परमेश्वर तीन व्यक्ति नहीं बल्कि तीन अलग अलग रूपों में केवल एक ही व्यक्ति है। यह ढंग परमेश्वर की एकता को बरकरार रखता है पर उन कई वचनों को अनदेखा करता है जिनमें तीनों को एक साथ दिखाया गया है। जब यीशु का बपतिस्मा हुआ तो परमेश्वर ने स्वर्ग से बात की और आत्मा कबूतर की तरह यीशु पर उतरा (लूका 3:21-22)। पृथ्वी पर रहने के दौरान यीशु किससे प्रार्थना करता था? यह कहना

बेवकूफी होगी कि यीशु अपने आप से प्रार्थना करता था। जब परमेश्वर मरियम की कोख में एक भ्रूण था तो वह संसार को कैसे चला सकता था और कैसे संभाल सकता था। परमेश्वर का ज्ञान सचमुच में इतना सीमित कैसे हो सकता था जितना पृथ्वी पर रहते समय यीशु को था (उदाहरण मरकुस 13:32), यदि वह एक ही व्यक्ति था?

धार्मिक जगत का एक और सामान्य समाधान पिता और पुत्र के बीच सम्बन्ध को फिर से प्राभाषित करने का है। यह मानने के बजाय कि यीशु सनातन है, यह विचार यीशु को केवल एक सृजत जीव के रूप में यानी पहला और बेशक सबसे बड़ी सृष्टि, परन्तु हालांकि यीशु न तो सृजा हुआ जीव है और न परमेश्वर से कम। नये नियम के कुछ वचन इस विचार को समर्थन देते हुए कहते हैं। उदाहरण के लिए, यीशु ने कहा, ''पिता मुझ से बड़ा है'' (यूहन्ना 14:28)। लूका 18:19 के साथ साथ मरकुस 10:18 में यीशु ने परमेश्वर पिता से अपने आपको अलग किया जब उसने कहा, ''तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं केवल एक अर्थात् परमेश्वर।'' परन्तु अन्य ढंगों की तरह यह विचार भी उन कई वचनों को अनदेखा कर देता है जो यीशु की सामर्थ और सनातन सुझाव की शिक्षा देते हैं जिन्हें हमने पाठ 2 में देखा था। नये नियम के वे वचन जो पिता के अपने पुत्र पर श्रेष्ठ होने को दिखाते हैं उन्हें आसानी से यीशु के परमेश्वर के गुणों को स्वेच्छा से छोड़ने का संकेत देते हुए समझा जा सकता है जैसा कि उसके देहधारी होने के समय फिलिप्पियों 2:5-11 में संकेत दिया गया है।

परमेश्वर एक है

यह शिक्षा पूरी बाइबल में मिलती है। यहूदी लोग आम तौर पर व्यवस्थाविवरण 6:4, को दोहराते थे जिसे शेमा कहा जाता था, ''हे इस्राएल, सुन यहोवा हमारा परमेश्वर एक ही है।'' यीशु ने भी मरकुस 12:29 में इस आयत को दोहराया। दस आज्ञाओं में पहली आज्ञा है, ''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।'' यशायाह ने कई अवसरों पर मूर्तिपूजा के विषय में बात की। केवल इन दो उदाहरणों को देखें। ''मैं सबसे पहला हूं, और मैं ही अंत तक रहूंगा; मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं'' (यशायाह 44:6)। ऐसी ही एक बात अगले अध्याय में मिलती, है, ''मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं'' (यशायाह 45:5)। 1 कुरिन्थियों 8:4 में पौलुस ने ऐसी ही बात कही, ''एक को छोड़ और, कोई परमेश्वर नहीं।'' याकूब 2:19 से हमें पता चलता है कि दुष्टात्माएं भी विश्वास करती है कि केवल एक ही 'परमेश्वर है।

तीन एक कैसे हो सकते हैं? हम मनुष्यों की यही समस्या है। हम तीन अलग-अलग भौतिक वस्तुओं को एक में मिलने और इसके बावजूद तीन अलग अलग वस्तुओं के रहने की बात को नहीं समझते हैं। अगले पाठ में कुछ रूपकों पर विचार करनें के साथ-साथ हम परमेश्वर के एक होने के इसी विचार को और देखेंगे जिससे हमें इस कठिन अवधारणा को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिले।

सृष्टि के सम्बन्ध में बाइबल क्या कहती है?

डॉन एल. नॉरवुड

हमारा परमेश्वर जिसने संसार को सृजा है, वो अनादि परमेश्वर है। वह सदा से है और सर्वशक्तिमान है। भजन लिखने वाले को यह लिखने की प्रेरणा दी गई, "इस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, या तूने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है" (भजन 90:2)। "आदि में तू ने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है" (भजन 102:25)। इसलिए बाइबल इन शब्दों के अनुसार आरम्भ होती है, "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की" (उत्पत्ति 1:1)। वास्तव में सृष्टि को परमेश्वर के वचन के द्वारा रचा गया था (यूहन्ना 1:1, 14; कुलुस्सियों 16; इब्रानियों 1:2; भजन 33:6-9)।

परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी (संसार) को छह दिनों में बनाया और सातवें दिन विश्राम किया (निर्गमन 31:17)। ये दिन आज के दिनों की तरह ही सामान्य दिन थे, जैसा कि उत्पत्ति 8:22 के साथ-साथ 2 पतरस 3:3, 4 में स्पष्ट बताया गया है। इस बात पर भी ध्यान दें कि यहूदी शब्द "योम" (जिसका अनुवाद "दिन" किया जाता है) दिन ही है, जिसे हम दिन-रात के रूप में जानते हैं। फिर उत्पत्ति 1:5 का बड़े ध्यान से अध्ययन करें। सुबह-शाम के उजियाले वाले भाग को दिन कहा गया है। अंधेरे को रात कहा गया है (देखें भजन 74:16)।

सृष्टि के **पहले ही दिन**, ज्योति को अस्तित्व में लाया गया। परमेश्वर ने ज्योति को अंधकार से अलग किया।

दूसरे दिन उसने आकाश (आसमान) को बनाया। और ऊपर के जल को आकाश के नीचे के जल से अलग कर दिया। फिर परमेश्वर ने ऊपर के आसमान को आकाश कहा।

तीसरे दिन उसने आकाश के नीचे के जल को इकट्ठा करके उन्हें अलग किया ताकि सूखी भूमि दिखाई दे सके। उसने भूमि को पृथ्वी और जल को समुद्र कहा।

परमेश्वर ने **चौथे दिन** पृथ्वी को प्रकाश देने और चिह्नों, मौसमों, दिनों, और वर्षों को संचालित करने के लिए आकाश में सूर्य और चांद को रखा (उत्पत्ति 1:14)।

पांचवें दिन परमेश्वर ने समुद्र के जीवों और आकाश में पृथ्वी के ऊपर उड़ने वाले पक्षियों को बनाया।

छठे दिन परमेश्वर ने पृथ्वी पर रहने के लिए जीवित प्राणियों को बनाया। इस सृष्टि में सबसे बड़ी मनुष्यजाति ही थी, जिसे परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया और पृथ्वी के सब जीवों पर अधिकार दिया गया (उत्पत्ति 1:27, 28)।

सातवें दिन उसने अपने काम से आराम किया (उत्पत्ति 2:1-4)।

यदि हम यह विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वर ने बिना किसी चीज़ से इन सब चीज़ों को बनाने की सामर्थ थी तो हमें यह विश्वास करने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए कि वह उन्हें फौरन भी बना सकता था, यानी दिन को उसी रूप में जैसा कि उसके प्रकट किए गए वचन में बताया गया है।

उनके विश्वास से मिला फल (कुलुस्सियों 1:6)

ऑवन डी. आल्ब्रट

"जो तुम्हारे पास पहुंचा है, और जैसा जगत में भी फल लाता और बढ़ता जाता है; अर्थात् जिस दिन से तुमने उसको सुना और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहिचाना है, तुम में भी ऐसा ही करता है।''

"जो तुम्हारे पास पहुंचा" (1:6)

मसीहियत मुख्य तौर पर मसीही लोगों द्वारा सुसमाचार को सारे संसार में ले जाने से फैली है, न कि संसार के यीशु की शिक्षा लेने के लिए पास आने के द्वारा। इसका अर्थ यह है कि सुसमाचार को मानवीय तर्क के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत यह इसलिए उपलब्ध है क्योंकि परमेश्वर ने इसे प्रकट किया है (गलातियों 1:10, 11)।

मपे ("पास") शब्द का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने लिखा कि सुसमाचार कुलुस्सियों के **पास पहुंचा** था। मपे का मूल अर्थ "में" एक स्थान से किसी दूसरे स्थान में जाते हुए, एक दायरे से किसी दूसरे में जाते हुए, और एक दिशा से किसी दूसरी दिशा में जाते हुए है। कार्य में हो या विचार में नये नियम में जहां भी मपे मिलता है, उसे पीछे की ओर जाने के बजाय आगे की ओर जाना है। कुछ उदाहरणों पर ध्यान दें जिनका इस्तेमाल पौलुस ने कुलुस्सियों की पत्री में किया: "सब पवित्र लोगों से" (1:4); "सामर्थ" (1:11); "सहभागी" (1:12); "राज्य में" (1:13); "उसी के लिए" (1:16); "जिसके लिए" (3:15); "इस लिए" (4:8)।

इसी शब्द का इस्तेमाल यीशु द्वारा किया गया। उसने कहा, "क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित [मपे] बहाया जाता है" (मत्ती 26:28)। उसका लहू आगे की ओर देखते हुए, पापों की क्षमा के उद्देश्य से और इसे सम्भव बनाने के लिए बहा था न कि पीछे की ओर देखते हुए कि पाप पहले ही क्षमा हो चुके हैं। ''मपे'' मरकुस 1:4 लूका 3:3 में मेल खाते वाक्यांशों में भी मिलता है, "पापों की क्षमा के लिए [मपे]" (लूका 24:47; प्रेरितों 2:38 भी देखें)। मन फिराव और बपतिस्मा पापों की क्षमा "के लिए (मपे)" है। ये प्रत्युत्तर आगे की ओर देखते हैं और क्षमा पाने के उद्देश्य के लिए हैं; वे पीछे को उस क्षमा को नहीं देखते जो पहले ही मिल चुकी है। यीशु का लहू ही वह स्त्रोत है, उनके लिए जो मन फिराते और बपतिस्मा लेते हैं क्षमा उपलब्ध करवाता है।

कुलुस्सियों में पौलुस ने मपे का इस्तेमाल 1:4, 6, 10, 11, 12, 13, 16, 20, 25, 29; 2:2, 5, 22; 3:9, 10, 15; 4:8, 11 जैसी कई आयतों में किया। ये सभी आयतें आगे की ओर देख रही हैं; इनमें से कोई भी पहले ही हो चुके किसी कार्य को पीछे की ओर नहीं देखती। कुछ लोग मत्ती 12:41ख को अपवाद के रूप में देखते हैं: "उन्होंने योना का प्रचार सुनकर [मपे] मन फिराया।" यदि यह आयत अपवाद हो भी तो भी प्रेरितों 2:38 अपवाद नहीं बनेगा। यह तर्क दिया जाता है कि नीनवे के लोगों ने योना का प्रचार ग्रहण करने "के

लिए" योना का प्रचार "के कारण" नीनवे के लोगों ने मन फिराया। मपे आगे को देखने वाला है इस कारण इस आयत का अर्थ है कि उनके जीवन योना द्वारा प्रचार किए गए आत्मिक सुधार में आए थे। योना द्वारा अपने प्रचार में उन्हें दिखाई गई आत्मिक दिशा में जाकर उन्हें उसके प्रचार मपे मन फिराने के रूप में बताया जा सकता है।

"जैसे जगत में भी फल लाता" (1:6)

सुसमाचार केवल मसीही लोगों के लिए नहीं, बल्कि सारे जगत (ाविउवे) के लिए है। यही संदेश हर जगह सब लोगों के लिए है। संसार के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना सुसमाचार के प्रचार के द्वारा है (मरकुस 16:15, 16; रोमियों 1:16; 1 कुरिन्थियों 1:21; 1 पतरस 1:10-12)। उसकी और कोई योजना नहीं है। संसार तब तक सुसमाचार को सुनकर जान नहीं सकता, जब तक कोई इसे उनके पास लेकर न जाए (रोमियों 10:14-17)।

"सारे जगत" वाक्यांश में "सारे" के पौलुस के इस्तेमाल का अर्थ आवश्यक नहीं कि पृथ्वी के कोने-कोने में हर जगह हो। पौलुस ने "सारे" का इस्तेमाल रोमी जगत के हर भाग के लिए किया (देखें रोमियों 1:8)। लूका ने लूका 2:1 में इसी प्रकार से "सारे" अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया। (छौठ के कुछ मुद्रणों में "सारे जगत के लोगों" के नीचे टिप्पणी में "रोमी साम्राज्य" लिखकर सही किया गया है।)

सुसमाचार केवल पौलुस के द्वारा ही नहीं बल्कि कई प्रचारकों द्वारा संसार में ले जाया जा रहा था। प्रेरितों के काम की पुस्तक से पाठक को यह प्रभाव मिल सकता है कि इस्त्राएल देश के बाहर मिशन कार्य में केवल पौलुस ही लगा हुआ था। लूका ने पौलुस के मिशनरी कार्य को पुस्तक के अन्तिम भाग तक सीमित कर दिया, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि पौलुस अकेला अन्यजाति जगत में सुसमाचार सुना रहा था। और भी प्रचारक संसार के विभिन्न भागों में खुशखबरी को लेकर जा रहे थे (प्रेरितों 11:19)। पौलुस की बात कि सुसमाचार सारे जगत में सुनाया जा चुका था, इस बात का संकेत है कि उसके अलावा कई और लोग पूरे रोमी साम्राज्य में सुसमाचार सुनाने के काम में लगे हुए थे।

"अर्थात् जिस दिन से तुम ने उस को सुना और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहिचाना है, तुम में भी ऐसा ही करता है" (1:6)

सुसमाचार को सुनाने और जीने का परिणाम **फल लाता जाता था।** यहां इस्तेमाल हुए यूनानी क्रिया रूप karpophoroumenon (जिसका अर्थ है "फल लाना") अपने आप में ऊर्जा का संकेत देता है। यह विवरणात्मक शब्द सुसमाचार से उत्पादन की जबर्दस्त शक्ति का संकेत देता है। पौलुस ने सुसमाचार को "उद्धार के नीमित परमेश्वर की सामर्थ" कहा (रोमियों 1:16)।

बीज बाने वाले के दृष्टांत की यीशु की व्याख्या के अनुसार वचन की उत्पादकता को बढ़ाता है। इस दृष्टांत में यीशु ने एक खेत में बीज बोए जाने की बात कही। "बीज जो परमेश्वर का वचन है" (लूका 8:11),"राज्य का वचन" (मत्ती 13:19) फल लाने के लिए बीज बोया जाना आवश्यक है। यीशु ने कहा, "जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी

है" (यूहन्ना 6:63)। "बीज" अर्थात् सत्य के वचन के द्वारा आत्माओं को नया जन्म दिलाकर शुद्ध किया जाता और नये सिरे से पैदा किया जाता है (1 पतरस 1:22, 23)।

आत्मिक बीज की तरह ही शारीरिक बीज की उत्पादन देने में अपनी सीमाएं हैं। आत्मिक बीज के उपजाऊ बने रहने के लिए कुछ शर्तें आवश्यक हैं: (1) बीज में अपने आप में जीवन होना आवश्यक है। (2) किसी न किसी द्वारा बीज को बोया जाना आवश्यक है। (3) इसे अच्छी भूमि में लगाया जाना आवश्यक है। (4) इसका पालन पोषण किया जाना आवश्यक है। (5) बीज से उगने वाले पौधे के लिए और बीज देना आवश्यक है। यीशु का राज्य सारे संसार में इसी तरह से फैल सकता है। जो लोग वचन की आज्ञा मानते हैं वे दूसरों के साथ वचन साझा करके फल ला सकते हैं। पिता, यीशु, और पवित्र आत्मा ने बीज उपलब्ध करवा दिया है, परन्तु वे इसे बोते नहीं हैं। यीशु के अनुयायियों को बीज बोने और पानी देने (1 कुरिन्थियों 3:6), बुआई करने और कटाई करने (यूहन्ना 4:35-38) की ज़िम्मेदारी दी गई है। पौलुस यह लिखते हुए कि "परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बर्तनों में रखा है" (2 कुरिन्थियों 4:7) इस विशेषाधिकार और ज़िम्मेदारी की बात कर रहा था।

पहली सदी के मसीही लोग, जहां भी गए वे अपने साथ वचन को ले गए। इसी कारण लोग प्रतिदिन बदलते थे, जिससे कलीसिया तेजी से बढ़ और फैल रही थी। गिनती में बढ़ोतरी तब हुई जब लोगों ने "सत्य का वचन सुना, जो सुसमाचार है" (इफिसियों 1:13) जिसे उन्हें सुनाया गया था, ग्रहण किया। मण्डलियां बढ़ने के अलग-अलग ढंग अपनाने की कोशिश कर सकती हैं, परन्तु बढ़ने के लिए परमेश्वर की योजना वचन के प्रचार के द्वारा ही होती है (प्रेरितों 8:4, 25; 18:11; 2 तीमुथियुस 4:2)। आरम्भिक कलीसिया "फल लाती और बढ़ती जाती" थी क्योंकि यह दूसरों के साथ लगातार परमेश्वर के वचन को साझा कर रही थी। कारसन ने लिखा है:

> परन्तु सुसमाचार केवल भीतर तक गहराई से ही काम नहीं करता बल्कि यह प्रभाव में भी लगातार बढ़ता जा रहा है। परमेश्वर के उपाय में ये दोनों बातें आपस में जुड़ी हुई हैं। दूसरों तक इसकी पहुंच आम तौर पर व्यक्तिगत रूप में लोगों में फल लाने के द्वारा होती है; और इस प्रकार से दूसरों के जीवनों पर सुसमाचार के प्रभाव में बढ़ने के द्वारा पवित्र बढ़ती है।

"फल" में संख्या और आत्मिक दो अलग अलग किस्में हो सकती हैं। संख्या के फल का अर्थ वे लोग हैं जिन्हें मसीह के पास लाया जाता है (यूहन्ना 4:34-36; 12:24; 15:8, 16; रोमियों 1:13; फिलिप्पियों 1:22)। आत्मिक फल (या "आत्मा के फल "; गलातियों 5:22, 23) भक्तिपूर्ण गुणों के बढ़ने को कहा गया है जो यीशु के नमूने पर चलने से मिलते हैं। दोनों आपस में जुड़े हुए हैं। मसीह के पास लाए गए नमूनों के लिए उसमें पाए जाने वाले आवश्यक गुणों को बढ़ाने की इच्छा करना आवश्यक है। परिणाम मसीह के जैसे बनना और अपने आस-पास के लोगों तक पहुंचना होगा।

जो भी फल देता है वह अपनी नसल के अनुसार ही फल देता है (उत्पत्ति 1:11, 12)। यह नियम आत्मिक क्षेत्र के साथ-साथ भौतिक क्षेत्र में भी लागू होता है। परमेश्वर के

राज्य का फल परमेश्वर का राज्य (मत्ती 13:19; लूका 8:11), अर्थात् कलीसिया है। उसके वचन को बोने से केवल मसीही लोग अर्थात् मसीह की कलीसिया के लोग ही निकलेंगे। सच्चाई का फल सच्चाई से उलट फल नहीं ला सकता। परमेश्वर का वचन मसीहियत की मांग की गई अलग अलग परछाइयां नहीं लग सकती। सुसमाचार का फल शिक्षा और जीने की शुद्धता में दिखाई गई मांगों से मेल खाता है। शुद्ध शिक्षा के अनुसार जीने से इससे जुड़े हुए लोगों में एकता आएगी (1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 4:4–6)।

दाखलता के डालियों के दृष्टांत में यीशु ने बताया था कि हर डाली जो उसमें बनी रहती है फल लाएगी। यदि डाली फल नहीं लाती है तो उसे काटकर आग में फेंक दिया जाता है (यूहन्ना 15:1–6)। बहुत फल लाने वाली डालियां परमेश्वर की महिमा करती हैं (यूहन्ना 15:8)।

केवल अन्य कलीसियाएं ही फल नहीं दे रही और बढ़ रही थीं बल्कि कुलुस्से में मसीह के चेले भी यही कर रहे थे जैसा कि "तुम में भी ऐसा ही करता है" शब्दों से पता चलता है (1:6)। वे सुसमाचार की सच्चाई को बांट रहे थे और वही परिणाम दे रहे थे। मण्डली केवल तभी बढ़ सकती है यदि इसके लोग खोए हुओं को यीशु का वचन सिखा रहे हों। फसल की उम्मीद तभी की जा सकती है जब बीज बोया गया हो। जहां बीज नहीं बोया गया वहां खेत खाली रहता है, झाड़ियां उग जाती हैं, परन्तु अच्छी फसल नहीं होती।

जिस दिन से तुम ने उस को सुना और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहिचाना है (1:6)

कुलुस्से में बीज बोया गया था। पौलुस ने कहा कि यह उसी दिन से फल ला रहा था **जिस दिन से** [कुलुस्सियों] **ने** [सुसमाचार] **को सुना और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहिचाना है।**

इन भाइयों ने सुसमाचार को तब तक बांटना आरम्भ नहीं किया जब तक उन्होंने इसे समझा नहीं। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार को समझना, उनके मसीही जीवनों में आरम्भ से ही था। मसीही जीवन का आरम्भ, जारी रहना, और बने रहना उसके अनुग्रह पर निर्भर था। "अनुग्रह" की अवधारणा को "अनुग्रह" शब्द का इस्तेमाल किए बिना पापों की क्षमा के लिए क्रूस का प्रचार करके समझाई जा सकती है। उद्धार मानवीय गुण से अलग, पाप क्षमा करने की मसीह के लहू और उसके जी उठने (रोमियों 3:25; 10:9, 10) की सामर्थ को समझने पर आधारित है, यह अनुग्रह है।

सुसमाचार के विवरणों में केवल लूका ने यीशु को अपनी शिक्षा में "अनुग्रह" (बींतपे) के यीशु के इस्तेमाल को लिखा है। उसने इसका अर्थ आभार के रूप में इस्तेमाल किया (लूका 6:32–34; 17:9), परन्तु कभी भी उस कृपा के रूप में नहीं जिसे कमाया न गया हो। बींतपे मत्ती या मरकुस में नही मिलता बल्कि केवल यूहन्ना की भूमिका में मिलता है (1:14, 16, 17)।

प्रेरितों के काम पुस्तक में जिन लोगों के सुसमाचार प्रचार करने की बात लिखी गई हैं उन्होंने अपने प्रवचनों में कभी बींतपे का इस्तेमाल नहीं किया परन्तु सुसमाचार के उनके

प्रचार से सम्बन्धित संदर्भों में कई बार यह शब्द मिलता है:

* बरनबास ने यरूशलेम की कलीसिया द्वारा अन्ताकिया के मसीही लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए भेजे जाने पर वहां पहुंचकर भाइयों द्वारा "परमेश्वर के अनुग्रह" को देखकर आनन्द किया (प्रेरितों 11:22, 23)।
* अपनी पहली मिशनरी यात्रा के दौरान अन्ताकिया में रहते हुए पौलुस और बरनाबास ने मसीही लोगों को "परमेश्वर के अनुग्रह" में बने रहने के लिए समझाया (प्रेरितों 13:43)। इकुनियुम में परमेश्वर ने उनके हाथों चिन्ह और अद्‌भुत काम कराकर "अपने अनुग्रह के वचन" पर गवाही दी (प्रेरितों 14:3)। अन्ताकिया की कलीसिया द्वारा उन्हें "परमेश्वर के अनुग्रह" को सौंपा गया था (प्रेरितों 14:26)।
* पतरस ने कहा कि अन्यजातियों का उद्धार "प्रभु यीशु के अनुग्रह" के द्वारा उसी तरह हो रहा था जैसे यहूदियों का उद्धार हो रहा था (प्रेरितों 15:11)।
* पौलुस और सिलास को दूसरी मिशनरी यात्रा पर भेजने पर भाइयों ने उसे "परमेश्वर के अनुग्रह" को सौंप दिया (प्रेरितों 15:40)।
* अप्पुलोस ने उन लोगों की बहुत सहायता की जिन्होंने "अनुग्रह" के द्वारा विश्वास किया था (प्रेरितों 18:27)।
* पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को बताया कि उसकी इच्छा थी कि "परमेश्वर के अनुग्रह" के सुसमाचार की गवाही संजीदगी से देने की अपनी सेवकाई को पूरा करे (प्रेरितों 20:24) और "उसके अनुग्रह" को सौंप दिया (प्रेरितों 20:32)।

बेशक प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज किसी भी सरमन में "अनुग्रह" शब्द नहीं है, परन्तु उन में पाए जाने वाले संदेश में क्षमा, उद्धार, और यीशु के द्वारा और उसके नाम में धर्मी ठहराया जाना होता ही था (प्रेरितों 3:19; 4:12; 10:43; 13:26, 39; 16:31, 32; 22516)। इस कारण चाहे "अनुग्रह" लिखा नहीं गया परन्तु यीशु के द्वारा परमेश्वर की क्षमा का प्रचार जब भी किया जाता था इसका प्रचार भी होता था।

पौलुस ने कहा कि कुलुस्सियों ने इस अनुग्रह को "पहचाना।" "पहचाना" (epiginosko) पूर्वसर्ग epi ("ऊपर") और gnosis ("जानना") का मेल है। यह शब्द किसी चीज को बौद्धिक रूप में जानने या समझने से कहीं बढ़कर है। इसका अर्थ शिक्षा और अनुभव के कारण पूरी तरह से जानना है। पौलुस एक पहचान की बात कर रहा था, जो एक मूल अवधारणा की पूरी समझ तक पहुंच गई थी। नये नियम में इस शब्द के रूपों को आम तौर पर आत्मिक समझ के लिए लागू किया जाता है (रोमियों 1:28; इफिसियों 1:17; 4:13; कुलुसियों 3:10; 1 तीमुथियुस 2:4)। कुलुस्से के लोगों ने मसीह के संदेश को सुनकर और उसे जीकर, इसकी ऊपर-ऊपर से जानकारी लेने के बजाय सुसमाचार के अर्थ को गहराई से समझ लिया था।

सुसमाचार को समझा जा सकता है। कुलुस्से के लोग इसका प्रमाण हैं। उन्होंने इसे सुना और समझा। पौलुस को उम्मीद थी कि जो उसने लिखा था इफिसुस के लोग उसे समझ लें। उसने उन्हें बताया,"जिस से तुम पढ़कर जान सकते हो, कि मैं मसीह का वह भेद कहां तक

समझता हूं" (इफिसियों 3:4)। उसने कुरिन्थियों को आश्वासन दिया, "हम तुम्हें और कुछ नहीं लिखते, केवल वह जो तुम पढ़ते मानते भी हो, और मुझे आशा है कि अन्त तक भी मानते रहोगे" (2 कुरिन्थियों 1:13)।

यह कहने का कि उन्होंने "सच्चाई से" पहचाना था, पौलुस का अर्थ था कि उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह का वास्तविक अर्थ समझ आ गया था और वे इसे जी रहे थे। अनुग्रह की उनकी बौद्धिक समझ के अलावा अब उन्हें अपने जीवनों में परमेश्वर के अनुग्रह की आशिषों की भी समझ थी। "सच्चाई से" केवल बाहरी दिखावे के बजाय, वे अनुग्रह के अर्थ को समझ चुके थे।

मसीहियत पक्के सबूतों और चमत्कारों पर आधारित है

रोजर ई. डिक्सन

मनुष्य के बनाए धर्म आम तौर पर कुछ काल्पनिक दावों पर या गुप्त में हुए चमत्कारों पर आधारित होते हैं। यहां पर लूका हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक में एक जबर्दस्त सफाई देता है जो मसीहियत के आरम्भ और बढ़ने का उपयुक्त उत्तर देती है। यह कुछ विश्वासियों के द्वारा किए जाने वाले चमत्कारों के "दावो" पर आधारित नहीं है। यह कुछ आरम्भिक सनकियों के काल्पनिक कामों के गुप्त में होने पर आधारित धर्म नहीं है। यह कलीसिया के आलौकिक रूप में आरम्भ होने का जबर्दस्त प्रदर्शन है। यीशु के आस-पास के चमत्कार और चेलों का आरम्भिक काम कहीं गुप्त में नहीं हुआ था। पौलुस ने राजा अग्रिप्पा के सामने इस बात का दावा किया था, "राजा भी जिसके सामने मैं निडर होकर बोल रहा हूं, ये बातें जानता है; और मुझे विश्वास है कि इन बातों में से कोई उससे छिपी नहीं, क्योंकि यह घटना किसी कोने में नहीं हुई" (प्रेरितों 26:26)।

पौलुस अपने मुकद्दमे को इस तथ्य के आधार पर पेश करता है कि न तो यीशु के चमत्कार और न ही सुसमाचार के आरम्भिक प्रचारकों के चमत्कार गुप्त में किए गए थे। इसलिए ये चमत्कार उनके परमेश्वर के प्रवक्ता होने की प्रामाणिकता को साबित करते हैं। ऐसे चमत्कारी कामों से इनकार नहीं किया जा सकता था। इस कारण हमें इस यीशु के सम्बन्ध में, और इतने सारे लोगों के उसे मान लेने के सम्बन्ध में निर्णय लेना पड़ेगा। यदि हम उसे जो वह है और जो कुछ उसने किया, मान लेते हैं तो वह हमारे जीवनों को भी वैसा ही बना देगा।

यीशु के चमत्कारों को सब लोगों ने देखा था। चेलों ने दावा किया कि मसीहियत की बुनियाद यीशु था। यीशु के उन चमत्कारी कामों से जो परमेश्वर की ओर से हुए थे, उसका परमेश्वर की ओर से होना साबित हो गया था। पतरस ने ऐलान किया, "हे इस्राएलियो, ये बातें सुनो: यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिह्नों से प्रगट है, जो

परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो" (प्रेरितों 2:22)। यरूशलेम के जिन लोगों के साथ पतरस बात कर रहा था वे इस बात से इनकार नहीं कर सकते थे कि यीशु ने उनके बीच में बड़े-बड़े काम किए थे। परमेश्वर ने "यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था" (प्रेरितों 10:38)।

पिन्तेकुस्त का आश्चर्यकर्म यरूशलेम नगर को दिखाया गया था। पिन्तेकुस्त वाले दिन "एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे [यानी प्रेरित] बैठे थे, गूंज गया" (प्रेरितों 2:1-2)। "जब यह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये [यानी प्रेरित] मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं" (प्रेरितों 2:6)। बड़ी गूंज यरूशलेम के बहुत से लोगों ने सुनी थी। भीड़ के लोगों ने प्रेरितों को उन भाषाओं में बोलते हुए सुना था जो उन्होंने कभी सीखी नहीं थी (प्रेरितों 2:8)। इसलिए यह चमत्कार कोई गुप्त में हुई बात नहीं थी। बल्कि यह सब के सामने हुआ था।

यरूशलेम में लंगड़े आदमी के साथ हुए चमत्कार का सबको पता था। चमत्कार दिखाने का मकसद था। हम नहीं जानते कि सुन्दर नामक द्वार वाले लंगड़े व्यक्ति को प्रेरितों 3 अध्याय तक, जब पतरस और यूहन्ना "प्रार्थना के समय" मन्दिर में जा रहे थे, यीशु द्वारा चंगा क्यों नहीं किया गया था? इसी अवसर पर पतरस ने उस लंगड़े से कहा था, "यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर" (3:6)। वह आदमी उठा, चलने लगा, और उछलता हुआ परमेश्वर की स्तुति करने लगा था। "सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते" हुए देखा (3:9)। वे सब लोग, जो कुछ हुआ था उसे जानने के लिए उनकी तरफ भागे। इस आश्चर्यकर्म को करने से पतरस को यह प्रचार करने के लिए लोग मिल गए कि यीशु ही मसीह और परमेश्वर का पुत्र है। इस प्रकार पतरस और यूहन्ना को यीशु के मान्य वक्ता होने की पुष्टि हुई ।

चमत्कारों से सार्वजनिक रूप में सब लोगों में प्रेरितों की गवाही साबित हुई। प्रेरितों को परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ की आज्ञा देने का अधिकार देने का वचन दिया गया था। यीशु ने प्रतिज्ञा की थी, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे" (प्रेरितों 1:8)। लूका द्वारा मसीहियत की सफाई में बताते हुए प्रेरितों के जीवनों में इस सामर्थ के काम करने की बात सबसे स्पष्ट है। मसीहियत के आरम्भ से ही साबित हो गया था कि प्रेरितों को परमेश्वर की ओर से भेजा गया है। पिन्तेकुस्त वाले दिन के बाद से "सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भुत काम और चिह्न प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे" (प्रेरितों 2:43)। "परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था कि उनमें जा मिले; तौभी लोग उनकी बड़ाई करते थे" (5:13)। परमेश्वर द्वारा चमत्कारों की इस बड़ी गवाही दिए जाने से "विश्वास करनेवाले बहुत से पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में बड़ी संख्या में मिलते रहे" (5:14) "यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे कि जब परतस

आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए" (5:15)। "यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे" (5:16)।

आज चाहे हम ने चमत्कार होते हुए न देखे हों परन्तु हमारा विश्वास उन लोगों की गवाही पर आधारित है जिन्होंने इन चमत्कारों को अपनी आंखों से देखा और इनके बारे में अपने कानों से सुना था। इस कारण लूका सब मसीही लोगों की ओर से थियुफिलुस को प्रेरितों के काम की पुस्तक की सफाई देते हुए लिख रहा है (देखें 1:1-3; लूका 1:1-4)।

सबसे बड़ा सलाहकार

ग्लेन कोली

"मेरा मन यह मानने को तैयार नहीं होता कि हमारे वैवाहिक जीवन में समस्याएं हैं। इतने सालों तक सब कुछ ठीक-ठाक था ... परन्तु अब नहीं है। कुछ देर पहले ही की तो बात है जब हमारी किसी बात पर असहमति हुई थी। हमारे बीच में झगड़ा हुआ जो बढ़ता ही चला गया। अगले दिन सब कुछ ठीक नहीं था। अब समय हाथ से निकल चुका है, और हमारे बीच एक दीवार बन चुकी है जिसे हम गिरा नहीं सकते। हमने इस पर अफ़सोस किया है (कई बार), और इसे भुलाने की कोशिश भी की है पर यह हमारे बीच में आ ही जाती है। शायद हमें किसी से इस सम्बन्ध में बात करनी चाहिए...।"

क्या आपने कभी इस तरह की या ऐसी भावनाओं को जताया है? बहुतों ने जताया है। परन्तु अच्छी बात यह है कि सब विवाहित लोगों की समस्याएं इतनी नहीं बिगड़तीं कि उन्हें तलाक के लिए अदालत तक जाना पड़े।

एक दिन अगर आपको यह ध्यान आता है कि आपके विवाह के लिए आपको किसी की सहायता की आवश्यकता है तो आप किसके पास और कहां जाएंगे? क्या आप किसी बाहरी व्यक्ति के सामने अपनी समस्याओं को बताने से झिझकते हैं? आपके लिए अच्छी खबर है: विवाह का सबसे बड़ा और बढ़िया सलाहकार आपको कहीं भी मिल सकता है। वह भी मुफ्त में। आपके लिये बेशकीमती सलाह का नमूना यह रहा:

"आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं। इस कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे।"

"पति-पत्नी का सिर है। हे पतियों अपनी अपनी पत्नियों से प्रेम रखो ... पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे। जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है वह अपने आप से प्रेम रखता है। पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।"

"हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के अधीन रहो। इसलिये कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिंच जाएं। तुम्हारा श्रृंगार दिखावटी न हो, ... वरन् तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की

अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है।"

"वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं।"

अतः सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले, और करूणामय, और नम्र बनो। बुराई के बदले बुराई मत करो और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरीत आशीष ही दो।"

यदि आप हैरान हैं कि यह कौन कहता है, तो उत्पत्ति 2, इफिसियों 5, और 1 पतरस 3 को देखे: यह परमेश्वर कहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन की ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका उत्तर बाइबल में न हो। इसका अध्ययन करें। परमेश्वर का वचन आपकी सहायता करेगा।

तेरे हाथ में क्या है?

हे मूसा, वो तेरे हाथ में क्या है?
केवल चरवाही की लाठी,
काम करने के लिए
साधारण सी छड़ी,
परन्तु परमेश्वर ने उसे
जबर्दस्त ढंग से इस्तेमाल किया
और, हां,
है भजन लिखने वाले दाऊद,
तेरे हाथ में क्या है?
एक गोफ़न और बहते नाले के पत्थर
उस दानव पर निशाना लगाना है।

दान की पेटी के पास एक विधवा,
अपनी गरीबी से लाचार,
उसका बलिदान,
केवल दो छोटे सिक्के,
परमेश्वर उन्हें देख आशीषित कर देता है

और तू, हे मसीही,
तेरे हाथ में वो क्या है?
तेरे पास क्या है?
बड़ा हो या छोटा सबका महत्त्व है
प्रभु इसके इस्तेमाल को आशीषित कर सकता है।

– गैरल रिचर्डसन